Vol 6 Issue 5 June 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 5 | June - 2016

Indian Streams Research Journal

प्राचीन भारत में भौगोलिक ज्ञान का विकास – एक संक्षिप्त विवरण

Satyabir Yadav
Associate Professor of Geography & Incharge Government College for Woman, Pali (Rewari)

प्रस्तावना :–

भूगोल का अध्ययन क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। पृथ्वी प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है। मानव का प्रारम्भिक काल से ही पृथ्वी से घनिष्ठ संबंध रहा है। भूगोल प्रकृति तथा मानव के संबंधों का अध्ययन करता है।

सभी विज्ञानों का उद्‌भव व विकास प्रकृति के साथ मनुष्यों की अंतः क्रियाओं के कारण ही हुआ है। उदाहरण के लिए सभ्यता के प्रारम्भिक चरण से अब तक अपने पर्यावरण की वनस्पतियों के साथ अन्तर्संबंधों के कारण मानव को उनके बारे में व्यापक जानकारी मिली। विश्व में अलग-अलग पर्यावरण में अलग-अलग प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। अतः वनस्पति शास्त्र (Botany) विज्ञान की एक अलग शाखा के रूप में विकसित हो गया।

इसी तरह मानव ने अपने पर्यावरण के जीवों के बारे में व्यापक ज्ञान प्राप्त किया वह जंतु विज्ञान (Zoology) कहलाया। विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्राकृतिक वनस्पतियों से प्राप्त जड़ी बूटियों तथा रसायनों का ज्ञान अर्जित करके मानव ने चिकित्सा विज्ञान (medical Science) को विकसित किया। पृथ्वी की आन्तरिक संरचना (Interior of the earth), पृथ्वी की उत्पति तथा भूतल की संरचना आदि के इतिहास की जानकारी अर्जित करके ज्ञान की एक अन्य शाखा भूगर्भ शास्त्र (Geology) को विकसित किया। प्रकृति के साथ संबंध को ध्यान रखते हुए मिटटी के बारे में समस्त जानकारी को मृदा विज्ञान तथा खनिजों की जानकारी के ज्ञान समूह को खनिज विज्ञान (Minerology) कहा गया है।

रसायनों के ज्ञान संग्रह को रसायन विज्ञान कहा गया है। इसी क्रम में पदार्थों की जानकारी के संकलन को भौतिक शास्त्र (Physics) का नाम दिया गया। नक्षत्रों के बारे में ज्ञान को ज्योतिष विज्ञान (Astronomy) का नाम दिया गया। इसी तरह मानव एवं पर्यावरण के अन्तर्संबंधों के परिप्रेक्ष्य में जलवायु से संबंधित ज्ञान को जलवायु विज्ञान (Climatology), मौसम से संबंधित ज्ञान को मौसम विज्ञान (Meteorology), महासागरों या सागरों से संबंधित अर्जित ज्ञान को समुद्र विज्ञान (Oceanology) आदि विज्ञान की शाखाओं के रूप में विकसित किया गया है। इसी तरह प्राकृतिक पर्यावरण के संदर्भ में मानव की आर्थिक गतिविधियों को अर्थशास्त्र, राजनीति क्रिया कलापों को राजनीति विज्ञान, सामाजिक ज्ञान के संग्रह को समाजशास्त्र, कृषि संबंधी ज्ञान को कृषि विज्ञान (Agricultural Science) नाम दिया गया है।

अतः संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि मानव और प्रकृति के लगातार अन्तर्संबंधों के कारण ही ज्ञान व विज्ञान की अनेको शाखायें विकसित हुई हैं। अतः आधुनिक भूगोलवेताओं ने भूगोल को सभी विज्ञानों की जननी कहा है। (Geography is the mother of all sciences)

प्राचीन भारत (४००० बी०सी० से ८०० ए०डी० तक) में तत्कालीन भूगोल एक क्रमबद्ध विज्ञान के रूप में विकसित हो चुका था। इस काल के अनेक महाग्रन्थों एवं शिला लेखों में उस समय के भौगोलिक ज्ञान के विकास के बारे में अच्छी तरह से पता

चलता है ।सिंधु घाटी की सभ्यता का काल ४००० ईसा पूर्व से २५०० ईसा पूर्व तक था। इस सभ्यता काल में भारतवासियों को कृषि, जलवायु, खनिजों, नदियों मैदानों व्यापार आदि का अच्छा ज्ञान था। वैदिक काल (२५००ई०पू०-१००० ई०पू०.) में नगरीय बस्तियां योजनाबद्ध आकृति एवं विन्यास की होती थी। रचित ग्रन्थों में आर्यों के उच्चस्तरीय भौगोलिक ज्ञान का वर्णन है। वैदिक काल में भौतिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, कृषि भूगोल, परिवहन भूगोल, औद्योगिक भूगोल, खगोलिय भूगोल का विकास अपनी चरम सीमा पर था। ऋग्वेद के मन्त्रों से आर्यों के भौगोलिक ज्ञान का पता चलता है। अथर्ववेद वेद में भू आकृतिक विज्ञान, जलवायु, वनस्पति, खनिज, मानव बस्तियां, सामाजिक रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन आदि का विस्तृत विवरण मिलता है।

रामायण और महाभारत काल (१६०० ई०पू०.-६०० ई०पू०.) के महाग्रन्थों में भी भौगोलिक ज्ञान की पुष्टि होती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र (३००ई०पू०.), मनुस्मृति (२०० ई०.पू०),आदि में भी भौगोलिक ज्ञान का उल्लेख मिलता है। सम्राट अशोक (३०० ईपू.) तथा गुप्त साम्राज्य काल (४०० से ७०० ई.) तक के भौगोलिक ज्ञान का वर्णन उस समय के ग्रन्थों, नाटकों तथा साहित्यों तथा शिलालेखो, ताम्रपत्रों आदि में मिलता है।

इस काल में आर्यभटट (जन्म ४७६ई.) एक वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम पृथ्वी को सर्वप्रथम गोलाकार पिण्ड बताया था। उन्होने ही चन्द्रग्रहण का वर्णन किया।

वाराहमिहिर (५०५ से ५८७ई.) ने खगोल विद्या को बहुत अधिक विकसित किया था। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भारत में (४००० ईपू० से ८०० ई. तक) भौगोलिक अध्ययन का विकास उच्च कोटि का था।

सम्राट हर्षवर्धन के समय के भूगोल का ज्ञान हमें बाणभटट के लिखित (६२९ई०) हर्ष चरित से भारवी की काव्य ग्रन्थों, चिनी यात्री ह्वेनसांग (६२९ई.) के भारत वर्णन तथा शिलालेखों आदि से प्राप्त होता है। हर्ष कालीन भूगोल ७वीं शताब्दी का भूगोल कहलाता है।

प्राचीन काल में भौगोलिक ज्ञान का विवरण विभिन्न शिलालेखों तथा नगरों की खुदाई से उपलब्ध लिखित साम्रगी तथा प्राचीन काल के विभिन्न ग्रन्थों से प्राप्त हैं जो निम्नलिखित हैं:-

१ सिन्धु सभ्यता काल (४००० ई० पू० से २५०० ई० पू० तक)का भौगोलिक ज्ञान दक्षिणी भारत के तिरूनलवैली तथा उत्तरी भारत के मोहन जोदडों तथा हड्डप्पा आदि नगरों की खुदाई से प्राप्त की गई साम्रगी तथा उनके शिलालेखों पर अकिंत लिपि द्वारा प्राप्त हुआ हैं।
२ वैदिक काल (२५०० ई० पू० से १००० ई० पू०) के ग्रन्थों में भारत के विभिन्न पर्वतों नदियो झीलों वनों मरूस्थलों नगरों और भू भागों का ज्ञान प्राप्त हुआ हैं।
३ बौद्व काल (६०० ई० पू० से २०० ई० पू०) के भौगोलिक ज्ञान के विवरण का प्रमुख स्त्रोत प्रारम्भिक बौद्व साहित्य हैं।
४ प्राचीन कालः- में रचे गये पुराण (१००० ई० पू० ३०० ई० पू०) तक तथा नवीन पुराण २०० ई० पू० से ११०० ई० तक माने गये हैं। उपरोक्त काल में कौटिल्य का अर्थशास्थ तथा पतंजलि का महाभाष्य इत्यादि ग्रन्थों से भौगोलिक ज्ञान प्राप्त हुआ हैं।
विभिन्न शाखाओं में भौगोलिक योगदान :-

१ भौतिक भूगोल :- वेदों में भौतिक भूगोल से सम्बन्धित ज्वालामुखी, भूकम्प
भू - क्षरण आदि शक्तियों द्वारा होने वाली क्रियाओं का वर्णन प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में उपलब्ध है। पर्वत, पठार, मैदान, जलप्रपात, नदियों, घाटियों, झीलों आदि का वर्णन भी प्राचीन वैदिक साहित्य में मिलता है।
२ कृषि भूगोल :- प्राचीन काल से ही भारत का प्रमुख व्यवसाय कृषि रहा है।
वैदिक काल में गेहूँ, चना, जौ, मूगं, कपास, गन्ना व तिलहन, उडद मसूर आदि फसलों का उल्लेख पाया जाता है तथा इसके साथ - साथ पशुपालन का विवरण भी मिलता है।
३ औद्योगिक भूगोल :- वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, आदि प्राचीन ग्रन्थों में कुटीर उद्योगों ,सूती रेशमी ऊनी वस्त उद्योगों आदि का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है।
४ खगोल विज्ञान :- भारत का खगोल विज्ञान सबसे अधिक प्राचीन है। वेद उपनिषद् एवम् प्राचीन ग्रन्थों में सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी के पारस्परिक सम्बन्धों, ऋतु परिवर्तन तथा सूर्य एवम् चन्द्रग्रहण आदि का विवरण मिलता हैं। खगोल विज्ञान के प्रमुख विद्वान आर्यभटट्, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य आदि ने खगोल विज्ञान की समस्या को हल करने के लिए बीजगणित, त्रिकोणमिति तथा ज्यॉमितीय विधियों की खोज की।
५ प्रादेशिक भूगोल :- पुराणों में सम्पूर्ण पृथ्वी को सात द्वीपो में विभाजित किया गया हैं।

१पुष्कर द्वीप
२ शक द्वीप
३ जम्मू द्वीप
४ कुश द्वीप
५ शाल्मली द्वीप
६ प्लक्ष द्वीप
७ क्रोंच द्वीप

पौराणिक ग्रन्थों में द्वीप को सागरों व झीलों से घिरा हुआ भू – खण्ड या महाद्वीप के रूप में प्रयोग किया गया हैं

6 राजनीतिक भूगोल :– प्राचीन काल में जनपद प्रमुख राजनीतिक ईकाइ थी जिसका वर्णन वेदों उपनिषदों रामायण महाभारत तथा पतंजलि के महाभाष्य में उपलब्ध है। उपनिषदों में भारत की दस विभिन्न राजनीतिक ईकाइयों गांधार, केकय, मद्र, उशीनर,मत्स्य, कुरू, पांचाल, काशी, कौशल एवं विदेह आदि का वर्णन मिलता है।

7 बस्ती भूगोल :– प्राचीन भारत के अधिकासों का वर्णन वैदिक, बौद्व, जैन आदि ग्रन्थों में मिलता है। वैदिक काल में ग्राम मानव के प्रमुख अधिवास थे गांवों को उनके आकार के अनुसार कई वगों जैसेः–गामका, गामा, निगमागमा, दारागमा आदि में बांटा गया था। व्यापार के केन्द्र कस्बा होते थे।

8 शैक्षिक केन्द्र :– भारत के प्रमुख नगर स्थल मार्ग के द्वारा एक दूसरे से जुडे हुए थे। पतंजलि के महाभाष्य नामक ग्रन्थ में मथुरा, वाराणासी, हस्तिनापुर, पाटलिपुत्र, तक्षशिला, नासिक तथा कांचीपुरम आदि प्रमुख नगरों का विवरण मिलता है।

REFERENCE :-

1.Mazid Hussain, Evolution of geographic thought Rawat Publication, Jaipur 1984.
2.S.M.Ali Geography of puranas.
3.Dikshit, R.D. (1997) Geographical Thought : A contextual History of Ideas, New Delhi: Prentice- Hall of India.
4.Partiyogita Darpan September 2003.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org